ब्रज रस बरस रह्यो ब्रज बीथिन, ज्ञानी बिनु जाने भरमाय ।
जेहि खोजत ज्ञानी जन लाखिन ।
चारिहुँ वेदन की प्रतिशाखन ।
हारि 'अलख' इमि लागे भाखन ।
वृन्दा विपिन सखिन अंचल पट, लिपट रह्यो सोइ धाय ।
जेहि शंकर उर-अंतर-ध्यावत ।
जाको भेद वेद नहिं पावत ।
निर्विकल्प, निर्लेप, बतावत ।
सोइ निकुंज बिच भानुलली के, चरण पलोटत जाय ।
जेहि माया-वस विश्व चराचर ।
ब्रह्माण्ड-नायक विधि, हरि, हर ।
नाचत ज्यों नट परवश बानर ।
तेहि दै छाछ नेकु सी छोरन, कोटिन नाच नचाय ।
जाकी भृकुटि-विलास प्रलयकर ।
जाके डर काँपत डर, थर थर ।
नामहि जाको भव-बंधन-हर ।
ताको ऊखल बाँधि यशोदा, लै साँटी डरपाय ।
जेहि लगि जपी तपी, भरमावत ।
योगी योग अगिनि जरि जावत ।
निज बल कृपा-कोर नहिं पावत ।
सो 'कृपालु' निज माय गोद हित, पर्यो धरणि बिलखाय ॥

भावार्थ-

ब्रज की प्रत्येक गलियों में ब्रजरस बरस रहा है, किन्तु फिर भी ज्ञानी (जानने वाला) होते हुये भी, बिना जाने भटक रहा है । जिस ब्रह्म को लाखों

आत्माराम पूर्णकाम परमहंस ज्ञानी भी चारों वेदरूपी वृक्षों की प्रत्येक शाखारूपी शाखाओं में अनादि काल से अनंत काल तक खोज-खोजकर हार गये एवं अंत में उन्हें यही कहना पड़ा कि 'ब्रह्म अलख है' अर्थात् उसका कोई स्वरूप नहीं है एवं उसे कोई देख भी नहीं सकता है, वही ज्ञानियों का 'अलख' पूर्णतम पुरुषोत्तम ब्रह्म सच्चिदानन्द श्री कृष्ण बनकर वृन्दाबन में ब्रज-गोपांगनाओं के वस्त्र के अंचल में दौड़कर अपने आप लिपट रहा है ।

जिस निर्गुण निराकर ब्रह्म का भगवान शंकर अपने हृदय में निरन्तर ध्यान करते हैं एवं जिसके मर्म को न जान सकने के कारण चारों वेद भी 'नेति-नेति' (इतना ही नहीं-इतना ही नहीं) कहकर चुप हो जाते हैं तथा वेद जिस ब्रह्म को निर्विकल्प एवं निर्लेप सिद्ध करता है, वही ब्रह्म ब्रज की निकुंजों में सविकल्प एवं लिप्त होकर वृषभानुनंदिनी राधिका जी के चरण-कमलों को दबाता है ।

जिस ब्रह्म की आधिभौतिक माया के अधीन अनंतकोटि ब्रह्माण्डों के सभी जड़ जंगम जीव परवश होकर रहते हैं एवं ब्रह्माण्डों के नायक ब्रह्मा, विष्णु, शंकर आदि भी जिसकी माया के वशीभूत होकर उसी प्रकार नाचते हैं जिस प्रकार नट के संकेत पर बन्दर नाचता है । उसी मायाधीश, परात्पर, गुणातीत परब्रह्म श्री कृष्ण को ब्रज के अहीरों की छोटी-छोटी छोरियाँ थोड़ी सी छाछ के संकेत से करोड़ों प्रकार के नाच नचाती हैं ।

जिस पूर्णतम-पुरुषोत्तम-ब्रह्म के भृकुटी विलास (भौहों के मरोड़) मात्र से अनंत-कोटि-ब्रह्माण्डों का महाप्रलय हो जाता है एवं जिसके भय से भय (यमराज) भी भयभीत होता है । जिसका नाम ही आवागमन के पंचक्लेश के बन्धन को नष्ट कर देता है । उसी निरपेक्ष कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तं समर्थ (स्वेच्छापूर्ण कार्य करने, न करने, एवं उल्टा करने में समर्थ) सर्वशक्तिमान भगवान को यशोदाजी ऊखल में बाँधकर एवं हाथ में छोटा सा पतला डंडा

लेकर मारने के लिये डरा रहा हैं ।

इन्द्रिय, मन, बुद्धि से परे एवं ज्ञातास्वरूप जिस निर्विशेष ब्रह्म की प्राप्ति के लिये असंख्या जप एवं तप करने वाले असंख्यों वर्षों तक भटका करते हैं एवं जिसके लिये योगी लोग अष्टांग योग करने के पश्चात् योग की अग्नि में जलकर भस्म हो जाते हैं, किन्तु फिर भी भगवान की किंचित् भी कृपा को साधन बल से नहीं प्राप्त कर पाते हैं । 'कृपालु' कहते हैं कि वही पूर्णतम पुरुषोत्तम ब्रह्म श्री कृष्ण अपनी माता यशोदा की गोद में जाने के लिये पृथवी पर लोटता हुआ अत्यन्त व्याकुलतापूर्वक रो रहा है । जिसका अभिप्राय यह है कि मैया मुझे गोद में ले ले ।

© 2008 जगद्गुरु कृपालु परिषत्